पोशाक में दुःख / हरभगवान चावला

वह बड़ा आदमी बड़े दुःख में था
सिर्फ़ दुःख में होना काफ़ी नहीं था
वह शानदार डिज़ाइनर पोशाक में भी था
उसके डिज़ाइनर हैट ने तो ग़ज़ब ढा दिया था
दुःख के माहौल में भी इसने लोगों को गुदगुदाया
दुःख में अगरचे ऐसी पोशाक पाप जैसी थी
पर ऐसी ही पोशाकें उसकी पहचान थीं
एक दुःख के लिए वह पहचान क्यों खोता?
सो, पोशाक में वह था, उसके भीतर दुःख था
दुःख में भी उसे अपना कर्त्तव्य पालन करना था
भाषण उसका कर्त्तव्य था, भाषण उसका शौक़ भी था
भाषण के दौरान उसने बार-बार याद दिलाया
कि भाषण देकर वह अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर रहा है
भाषण के दौरान वह इस दुःख का उल्लेख करता रहा
रह-रहकर उसकी आँखों से दुःख ऐसे छलकता रहा
जैसे कीचड़ से भरी सड़कों पर दौड़ती चमचमाती
गाड़ी के पहियों के नीचे उछल-उछल जाता है कीचड़
कर्त्तव्य के लिए आयोजित भाषण के बाद
चर्चा न दुःख की थी, न कर्त्तव्य भाषण की
चर्चा में उसकी पोशाक रही, सबसे बढ़कर हैट रहा चर्चा में
और रहे भी क्यों नहीं -
ऐसे दुःख तो रोज़ घटते हैं, भाषण भी रोज़ होते हैं
इतना विलक्षण, इतना भव्य हैट कब देखने को मिलता है?

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

Paytm
MM
Majdoor Morcha
UPI ID: 8851091460@paytm
Paytm: 8851091460
Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

व्यंग्य कथा / हरिशंकर परसाई

एक दिन राजा ने खीझकर घोषणा कर दी कि मुनाफ़ाख़ोरों को बिजली के खम्भे से लटका दिया जायेगा।

सुबह होते ही लोग बिजली के खम्भों के पास जमा हो गये। उन्होंने खम्भों की पूजा की, आरती उतारी और उन्हें तिलक किया।

शाम तक वे इंतज़ार करते रहे कि अब मुनाफ़ाख़ोर टांगे जायेंगे, और अब। पर कोई नहीं टाँगा गया।

लोग जुलूस बनाकर राजा के पास गये और कहा,"महाराज, आपने तो कहा था कि मुनाफ़ाख़ोर बिजली के खम्भे से लटकाये जाऐंगे,पर खम्भे तो वैसे ही खड़े हैं और मुनाफ़ाख़ोर स्वस्थ और सानन्द हैं।"

राजा ने कहा,"कहा है तो उन्हें खम्भों पर टाँगा ही जायेगा। थोड़ा समय लगेगा। टाँगने के लिये फन्दे चाहिये। मैंने फन्दे बनाने का आर्डर दे दिया है। उनके मिलते ही, सब मुनाफ़ाख़ोरों को बिजली के खम्भों से टाँग दूँगा।

भीड़ में से एक आदमी बोल उठा, "पर फन्दे बनाने का ठेका भी तो एक मुनाफ़ाख़ोर ने ही लिया है।"

राजा ने कहा, "तो क्या हुआ? उसे उसके ही फन्दे से टाँगा जाएगा।"

तभी दूसरा बोल उठा,"पर वह तो कह रहा था कि फाँसी पर लटकाने का ठेका भी मैं ही ले लूँगा।"

राजा ने जवाब दिया, "नहीं, ऐसा नहीं होगा। फाँसी देना निजी क्षेत्र का उद्योग अभी नहीं हुआ है।"

लोगों ने पूछा, "तो कितने दिन बाद वे लटकाये जाऐंगे।"

राजा ने कहा, "आज से ठीक सोलहवें दिन वे तुम्हें बिजली के खम्भों से लटके दीखेंगे।"

लोग दिन गिनने लगे।

सोलहवें दिन सुबह उठकर लोगों ने देखा कि बिजली के सारे खम्भे उखड़े पड़े हैं। वे हैरान हो गये कि रात न आँधी आयी न भूकम्प आया, फिर वे खम्भे कैसे उखड़ गये!

उन्हें खम्भे के पास एक मज़दूर खड़ा मिला। उसने बतलाया कि मज़दूरों से रात को ये खम्भे उखड़वाये गये हैं। लोग उसे पकड़कर राजा के पास ले गये।

उन्होंने शिकायत की, "महाराज, आप मुनाफ़ाख़ोरों को बिजली के खम्भों से लटकाने वाले थे, पर रात में सब खम्भे उखाड़ दिये गये। हम इस मज़दूर को पकड़ लाये हैं। यह कहता है कि रात को सब खम्भे उखड़वाये गये हैं।"

राजा ने मज़दूर से पूछा,"क्यों रे, किसके हुक़्म से तुम लोगों ने खम्भे उखाड़े?"

उसने कहा,"सरकार, ओवरसियर साहब ने हुक़्म दिया था।"

तब ओवरसियर बुलाया गया।

उससे राजा ने कहा, "क्यों जी तुम्हें मालूम है, मैंने आज मुनाफ़ाख़ोरों को बिजली के खम्भे से लटकाने की घोषणा की थी?"

उसने कहा, "जी सरकार!"

"फिर तुमने रातों-रात खम्भे क्यों उखड़वा दिये?"

"सरकार, इंजीनियर साहब ने कल शाम हुक़्म दिया था कि रात में सारे खम्भे उखाड़ दिये जायें।"

अब इंजीनियर बुलाया गया। उसने कहा उसे बिजली इंजीनियर ने आदेश दिया था कि रात में सारे खम्भे उखाड़ देना चाहिये।

बिजली इंजीनियर से कैफ़ियत तलब की गयी, तो उसने हाथ जोड़कर कहा,"सेक्रेटरी साहब का हुक़्म मिला था।"

विभागीय सेक्रेटरी से राजा ने पूछा, "खम्भे उखाड़ने का हुक़्म तुमने दिया था।"

सेक्रेटरी ने स्वीकार किया, "जी सरकार!"

राजा ने कहा, "यह जानते हुये भी कि आज मैं इन खम्भों का उपयोग मुनाफ़ाख़ोरों को लटकाने के लिये करने वाला हूँ, तुमने ऐसा दुस्साहस क्यों किया।"

सेक्रेटरी ने कहा,"साहब, पूरे शहर की सुरक्षा का सवाल था। अगर रात को खम्भे न हटा लिये जाते, तो आज पूरा शहर नष्ट हो जाता!"

राजा ने पूछा, "यह तुमने कैसे जाना? किसने बताया तुम्हें?

सेक्रेटरी ने कहा, "मुझे विशेषज्ञ ने सलाह दी थी कि यदि शहर को बचाना चाहते हो तो सुबह होने से पहले खम्भों को उखड़वा दो।"

राजा ने पूछा, "कौन है यह विशेषज्ञ? भरोसे का आदमी है?"

सेक्रेटरी ने कहा, "बिल्कुल भरोसे का आदमी है सरकार। घर का आदमी है। मेरा साला होता है। मैं उसे हुज़ूर के सामने पेश करता हूँ।"

विशेषज्ञ ने निवेदन किया, "सरकार, मैं विशेषज्ञ हूँ और भूमि तथा वातावरण की हलचल का विशेष अध्ययन करता हूँ। मैंने परीक्षण के द्वारा पता लगाया है कि जमीन के नीचे एक भयंकर प्रवाह घूम रहा है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि आज वह बिजली हमारे शहर के नीचे से निकलेगी। आपको मालूम नहीं हो रहा है, पर मैं जानता हूँ कि इस वक़्त हमारे नीचे भयंकर बिजली प्रवाहित हो रही है। यदि हमारे बिजली के खम्भे ज़मीन में गड़े रहते तो वह बिजली खम्भों के द्वारा ऊपर आती और उसकी टक्कर अपने पॉवरहाउस की बिजली से होती। तब भयंकर विस्फोट होता। शहर पर हजारों बिजलियाँ एक साथ गिरतीं। तब न एक प्राणी जीवित बचता, न एक इमारत खड़ी रहती। मैंने तुरन्त सेक्रेटरी साहब को यह बात बतायी और उन्होंने ठीक समय पर उचित कदम उठाकर शहर को बचा लिया।

लोग बड़ी देर तक सकते में खड़े रहे। वे मुनाफ़ाख़ोरों को बिल्कुल भूल गये। वे सब उस संकट से अविभूत थे, जिसकी कल्पना उन्हें दी गयी थी। जान बच जाने की अनुभूति से दबे हुये थे। चुपचाप लौट गये।

उसी सप्ताह बैंक में इन नामों से ये रकमें जमा हुईं - सेक्रेटरी की पत्नी के नाम- 2 लाख रुपये; श्रीमती बिजली इंजीनियर- 1 लाख; श्रीमती इंजीनियर -1 लाख; श्रीमती विशेषज्ञ - 25 हज़ार; श्रीमती ओवरसियर- 5 हज़ार ।

उसी सप्ताह "मुनाफ़ाख़ोर संघ" के हिसाब में नीचे लिखी रकमें "धर्मादा" खाते में डाली गयीं - कोढ़ियों की सहायता के लिये दान- 2 लाख रुपये; विधवाश्रम को- 1 लाख; क्षयरोग अस्पताल को- 1 लाख; पागलख़ाने को-25 हजार; अनाथालय को- 5 हज़ार।

दिल की बात ये है कि ये दिल की बात है

यह तस्वीर दमिश्क (सीरीया) में 1899 में ली गई थी। बौने जैसा दिखने वाले शख्स का नाम समीर है। समीर ईसाई था और चल नहीं सकता। जिस शख्स ने उसे अपनी पीठ पर जिसे बैठा रखा है उसका नाम मुहम्मद है। वह मुसलमान है और वह नाबीना (अंधा) था।

समीर, मोहम्मद को यह बताता था कि उसे कहाँ जाना है, और समीर शहर की सड़कों पर घूमने के लिए अपने दोस्त की पीठ का उपयोग करता था। वे दोनों अनाथ थे और एक ही कमरे में रहते थे। समीर एक हकावती (कहानी सुनाने वाला) था, उसके पास कहानियों का खज़ाना था वह दमिश्क के एक कैफे

में लोगो को मनोरंजन के लिये कहानियां सुना कर अपनी गुज़र बसर करता था।

मोहम्मद उसी कैफे के सामने केक बेचता था उसे अपने दोस्त की कहानियाँ सुनना बहुत पसंद था। एक दिन, जब मोहम्मद अपने कमरे में गया, तो अपने अज़ीज़ दोस्त को मृत पाया। मोहम्मद अपने दोस्त की मौत से टूट गया और वह अपने दोस्त के लिए लगातार कई दिनों तक रोता रहा। किसी ने उससे पूछा कि अलग अलग धर्मों के होने के बावजूद वो इतने अच्छे से कैसे घुल-मिल गए, तब मोहम्मद ने अपने हाथ से अपने दिल की ओर इशारा करते हुए केवल यही कहा- "हम दो जिस्म एक जान थे।"

-साइबर नजर